अध्याय : 6

समन्वित मूल्यांकन

अध्याय : 6

समन्वित मूल्यांकन

स्वतंत्रता के उपरान्त हिन्दी के प्रयोगशील नाटककारों की एक लम्बी परंपरा दिखाई पड़ती है, जिसमें जगदीशचन्द्र माथुर, मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, सुरेन्द्र वर्मा, धर्मवीर भारती, रमेश बक्षी, डॉ॰शंकर शेष, बृजमोहन शाह, भुवनेश्वर प्रसाद, बिपिनकुमार अग्रवाल, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, मुद्राराक्षस आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वातंत्र्योत्तर प्रयोगशील नाटककारों में जगदीशचन्द्र माथुर के "कोणार्क" का विशेष महत्त्व है। कोणार्क हिन्दी का पहला प्रयोगशील नाटक है, जिसमें कथ्य, शिल्प, शैली और मंचीयता के विविध प्रयोग दिखाई पड़ते हैं। मोहन राकेश के "आषाढ का एक दिन", "लहरों के राजहंस" और "आधे अधूरे" प्रयोगधर्मिता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नाटक हैं। लक्ष्मीनारायण लाल ने तो हिन्दी जगत में प्रतीकात्मक तथा मिथक नाटक लिखकर शिल्प और शैली की दृष्टि से क्रांति ही उपस्थित की। उनके "नाटक तोता-मैना", "सगुण पंछी", "सब रंग मोहभंग", "अब्दुल्ला दीवाना", "सत्य हरिश्चन्द्र", "राम की लड़ाई" आदि उत्कृष्ट प्रयोगशील नाटक हैं। सुरेन्द्र वर्मा ने भी "द्रोपदी", "सेतुबंध" "सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक", "शंकुतला की अँगूठी", "छोटे सैयद बडे सैयद" आदि नाटक लिखकर प्रयोगशील नाट्य-परंपरा को समृद्ध किया है। नाटककार मणि मधुकर ने भी प्रयोगशील नाट्य-परंपरा को समृद्ध करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

मणि मधुकर हिन्दी के एक ऐसे प्रयोगशील नाटककार हैं जिन्होंने अपने नाटकों में विसंगत नाट्य-शैली और लोक-नाट्य-शैली का सुन्दर समन्वय स्थापित किया है। अन्य नाटककारों की अपेक्षा उनके नाटक इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं कि उन्होंने जीवन की सच्चाई को जाना है, परखा है, भोगा है और इसी कारण उनके नाटकों का कथ्य अत्यंत

विराट बन गया है। मणि मधुकर ने अपने असंगत नाटकों में जीवन की असंगतियों को बड़े ही मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया है। विशेषतः सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य में उनके नाटक अपना महत्त्व रखते हैं। उनके नाटकों में असंगतियों की अभिव्यक्ति सटीक तथा मार्मिक रूप में हुई है। असंगत नाटकों में उन्होंने मुख्यतया व्यंग्य के माध्यम से जीवन के विराट क्षेत्र को रेखांकित किया है। यहाँ एक बात ध्यान में रखना जरूरी है कि जहाँ मुद्राराक्षस जैसे सशक्त असंगत नाटककार ने मुख्यतया जीवन की असंगतियों पर जोर देकर उनको उद्घाटित किया है, वहाँ मणि मधुकर ने अपने नाटकों में जीवन की असंगतियों और स्थितियों को व्यापक फलक पर प्रस्तुत किया है और उन असंगतियों को दूर करने का कुछ नया मार्ग भी दिखलाया है। इस दृष्टि से उनके **रसगंधर्व, बुलबुल सराय** और **बोलो बोधिवृक्ष** महत्त्वपूर्ण नाटक हैं।

मणि मधुकर के नाटक लोक-नाट्य-शैली के अनुपम उदाहरण हैं। उन पर राजस्थान की लोक-नाट्य-परंपरा का प्रभाव परिलक्षित होता है। साथ ही साथ लोक-नाट्य उनका प्रिय विषय भी रहा है। भारत देहाती प्रधान देश है और सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले नाटकों की सृष्टि करना उनका ध्येय है। इसी कारण उन्होंने हिन्दी में कुछ लोक-नाट्य आम आदमी के नाटक लिखकर हिन्दी की लोक-नाट्य परम्परा समृद्ध की है। लोक-नाट्य के क्षेत्र में उन्होंने अनेक लोक-कथाओं को चुना है और उनके सहारे कथ्य को प्रकट किया है। उनके लोक-नाट्य में एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने पौराणिक, ऐतिहासिक मिथकों को तोड़-मरोड़कर आधुनिक जीवन की नग्न यथार्थता को प्रकट किया है। इस दृष्टि से उनके नाटकों में प्रयुक्त मंगलाचरण की विडम्बना, शपथ-ग्रहण समारोह का परिहास, श्रद्धांजली की औपचारिकता विशेष उल्लेखनीय है। मणि मधुकर ने अपने नाटकों में लोक-गीतों को प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है और साथ ही साथ शेर-शायरी और कथा-गायन के प्रयोगों के माध्यम से आधुनिक जीवन को उद्घाटित किया है। दुलारीबाई तथा इकतारे की आँख लोक-नाट्य-शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

मणि मधुकर ने अपने नाटकों में शिल्प के विविध प्रयोग किए हैं। वस्तुविन्यस्त प्रयोग की दृष्टि से नाट्य-समीक्षात्मक प्रयोग और कथ्यहीनतामूलक प्रयोग विशेष उल्लेखनीय हैं।

पात्रों की संख्या और उनके नामकरण के प्रयोग नाटककार की कारयत्री प्रतिभा के परिचायक हैं। मणि मधुकर शब्दशिल्पी हैं और इसी कारण उन्होंने अपने नाटकों में भाषा शिल्प और संवाद-शिल्प के अभिनव प्रयोग किए हैं। पूर्वदीप्ति भाषाशैली, अदालती भाषाशैली, प्रतीकात्मक भाषाशैली, विडम्बनात्मक भाषाशैली तथा मनगढ़न्त सूक्तियाँ और प्रचलित सूक्तियों का प्रयोग उल्लेखनीय है। संवाद शिल्प में भी खण्डित संवाद, अदालती संवाद, निरर्थक संवाद, असम्बद्ध संवाद के प्रयोग विशेष नाट्यपूर्ण हैं। उनका शब्द-सौष्ठव बड़ा ही मर्मभेदी और व्यंग्य से परिपूर्ण है। उन्होंने अपने नाटकों में व्यक्ति और संज्ञावाचक, वस्तुवाचक, प्राकृतिक, ऐंद्रिय तथा पक्षी-प्रतीकों का प्रयोग कर प्रतीकों में नयी अर्थवत्ता भर दी है। उनके नाटकों के शीर्षक प्रयोग की दृष्टि से अभिनव, सार्थक तथा सटीक हैं। रसगंधर्व, इकतारे की आँख, बोलो बोधिवृक्ष, शीर्षक इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

मणि मधुकर स्वयं एक अच्छे नाटककार तथा कुशल निर्देशक हैं। वे रंगमंच से जुड़े रहे हैं। अतः उन्होंने अपने नाटकों में मंचीयता के बड़े ही आकर्षक और बहुआयामी प्रयोग किए हैं। उनके नाटकों के दृश्यबंधगत प्रयोग अनूठे हैं। रसगंधर्व, बुलबुल सराय, इकतारे की आँख और बोलो बोधिवृक्ष नाटक में उन्होंने अंक विभाजन की जगह "पूर्वार्ध" और "उत्तरार्ध" का प्रयोग किया है और दुलारीबाई नाटक में ,एक के बाद एक कई दृश्यों की नियोजना की है। उनके नाटकों का अभिनय पक्ष बड़ा ही व्यापक रहा है। उन्होंने मुख्यतया अपने नाटकों में अभिनय को अधिक स्थान और महत्त्व दिया है। उनके व्यक्ति-समाजबोध परक विशिष्ट प्रयोगों में दुलारीबाई की कंजूसी (दुलारीबाई), अफसर का मार्मिक न्याय और कामचोर कैदी (रसगंधर्व) और कबीर की मुक्ति की मांग (इकतारे की आँख) ऐसे प्रयोग हैं। जो अभिनेयता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने अपने नाटकों में पात्रों के वेशान्तर के अभिनव प्रयोग करके अभिनय की एक नयी परम्परा प्रस्तुत की है। दुलारीबाई नाटक के कल्लू भांड का अभिनय इस दृष्टि से लाजवाब है। उन्होंने अपने नाटकों में कथा-गायन, नृत्य-गायन, ढोलक-नृत्य-गान के प्रयोग कर लोक-नाट्य-शैली परंपरा को उजागर किया है। मुद्राभिनय के प्रयोग भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनके नाटकों की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि एक पात्र अनेक भूमिकाएँ अदा कर सकता है। अर्थात इस प्रकार की भूमिकाएँ अदा करने

के लिए कुशल, अभिजात अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की जरूरत है। अन्यथा यह प्रयोग असफल भी बन सकता है। दुलारीबाई, बुलबुल सराय और इकतारे की आँख में प्रयुक्त पात्रों की संख्या और इकतारे की आँख में प्रयुक्त पात्रों की संख्या और एक अभिनेता या अभिनेत्री द्वारा अनेक पात्रों का अभिनय नाटककार की प्रतिभा तथा रंगमंच-विषयक उनके गहरे ज्ञान के परिचायक हैं। उन्होंने अपने नाटकों में प्रकाश-योजना, ध्वनि संकेत और संगीत के औचित्यपूर्ण और अर्थपूर्ण प्रयोग कर अपनी मंच संबंधी धारणा को अधिक व्यापक बनाया है। उन्होंने अपने नाटकों की रंगमंचीय प्रस्तुति के बारे में अपने अनुभव मुलाकातों के माध्यम से व्यक्त किए हैं। उन्होंने अपनी नाटकों की प्रस्तुति के बारे में अपने अच्छे बुरे अनुभव स्पष्टतया बताए हैं और दर्शाया है कि नाटककार केवल आलेख लिखने तक नाटककार रहता है तथा निर्देशक और अन्य रंगकर्मियों के योगदान से वह नाट्यालेख सही अर्थ में नाटक बन जाता है।

मणि मधुकर ने अपने नाटकों में साँग, नोटंकी, माच, नाचा, तमाशा, जात्रा आदि का प्रयोग किया है और यह भी बताया है कि अलग-अलग नाट्यमंडलियाँ अलग-अलग रंगशालाओं में इनका इस्तेमाल कर सकते हैं। दर्शकीय और पाठकीय संवेदना के बारे में इतना जरूर कहा जा सकता है कि अधिकतर दर्शकों या समीक्षकों ने उनके नाटकों की मंचीय प्रस्तुति के बारे में सराहना ही की है। लेकिन कुछ दर्शकों या समीक्षकों ने उनके नाटकों की कटु आलोचना भी की है। तथापि यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि मणि मधुकर एक ऐसे लोकधर्मी और प्रयोगधर्मी नाटककार हैं, जिन्होंने रसगंधर्व, दुलारीबाई, बुलबुल सराय और बोलो बोधिवृक्ष नाटक हिन्दी जगत को देकर हिन्दी की प्रयोगशील नाट्य परंपरा को विशेष रूप में समृद्ध किया है।

मणि मधुकर के प्रयोगशील नाटकों की विशेषता यह है कि उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र के और लेखक वर्ग के लोगों पर कठोर आघात किये हैं, और व्यक्तियों के नामों का स्पष्ट उल्लेख करते हुए अपनी निडरता और साहस का परिचय दिया है। हाल ही में प्रकाशित बोलो बोधिवृक्ष नाटक इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। एक निर्भीक प्रयोगशील नाटककार के रूप में हिन्दी जगत् में मणि मधुकर का नाम हमेशा रोशन रहेगा।

मणि मधुकर के नाटकों की एक कमी यह कही जा सकती है कि उनके नाटकों का मनोवैज्ञानिक पक्ष दुर्बल रहा है। पात्रों के अन्तर्द्वंद्व खण्डित व्यक्तित्व तथा मनोविकारों को उद्घाटित करने का उन्होंने प्रयास नहीं किया है। लगता है राजनीतिक क्षेत्र में और गतिविधियों में अधिक ध्यान देने के कारण उनके नाटकों का मनोवैज्ञानिक पक्ष ज्यादातर उपेक्षित रहा होगा। तथापि इतना अवश्य है कि हिन्दी के चोटी के प्रयोगशील नाटककारों में उनका स्थान अग्रेसर रहेगा और नये नाटककारों को नये-नये प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेगा।